IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सह–शैक्षिक जागरूकता कार्यक्रमों का सामाजिक अंधविश्वास को दूर करने में प्रभावशीलता का अध्ययन

निर्देशिका :
डॉ. आरती गुप्ता
(असिस्टेंट प्रोफेसर)

प्रस्तुतकर्त्री :
गरिमा शर्मा
(एम.एड. छात्रा)

(1) शोध सार :

आज जहाँ विज्ञान ने इतनी प्रगति कर ली है, अब कुदरत को भी चुनौती दी जा रही है, हमारे वैज्ञानिक आए दिन नए नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे है, ताकि मानव जाति का विकास हो सकें, लेकिन मानव जाति स्वयं ही अपनी प्रगति में बाधक बनी हुई है। आज यह दुःख की बात है कि एक ऐसा देश जहाँ विज्ञान इतना आगे बढ़ चुका है और अंतरिक्ष में सैटेलाइट तक भेजे जा रहे है, दूसरे ग्रहों पर जीवन खोजा जा रहा है, वहां इंसानों की बलि दी जाती है। लोक आज के वैज्ञानिक युग में डायन और टोना–टोटका जैसी बातों पर विश्वास करते हैं। अगर गाँव में कोई बीमार पड़ जाए तो, डॉक्टर के पास ले जाने से पहले तांत्रिक और ओझा के पास ले जाने को प्राथमिकता देते है। देश में अंधविश्वास निश्चित ही बढ़ रहा है और इसका सबसे बड़ा कारण डर है। पिछले कुछ महीनों से हम महामारी और कई अन्य परेशानियों का सामना कर रहे है, जिससे जनमानस में डर फैल गया है। इसका फायदा कुछ लोग उठा रहे है। वे अंधविश्वास को बढ़ावा दे रहे है। तंत्र–मंत्र का आज कारोबार बनता नजर आ रहा है। ''वशीकरण'' नाम से कई ज्योतिष वेबसाइट चला रहे हैं। जहाँ खाते में पैसे डलाए जाते है। फिर ई–मेल के जारिए अपॉइंटमेंट लिया जाता है। अंधविश्वास का बाजार तैयार हो रहा है। सम्पूर्ण भारत में अंधविश्वास ने अपनी जड़े फैला रखी है।

समाज में व्याप्त अंधविश्वास को दूर करने के लिए वैज्ञानिक सोच के साथ जनजागृति की जरूरत है। सामाजिक कुरीतियों, दहेज–प्रथा, बाल–विवाह, डायन–प्रथा आदि तथा सामाजिक समस्याओं जैसे बाल यौन–शोषण, बेरोजगारी आदि प्रतिजन मानव को जागरूकता के लिए कई कार्यक्रम किये जाते है। अतः शोधकर्त्री ने सामाजिक अंधविश्वास केप्रति जागरूकता कार्यक्रमों द्वारा बी.एड. प्रशिक्षार्थियों पर प्रमाण का अध्ययन करने हेतु इस समस्या का चयन किया। इस अध्ययन से ज्ञात होता है कि जागरूकता कार्यक्रम सामाजिक अध्ययन की समस्या को दूर करने में कितने प्रभावी सिद्ध हो सकते है।

(2) **शोध का शीर्षक :**

सह–शैक्षिक जागरूकता कार्यक्रमों का सामाजिक अंधविश्वास को दूर करने में प्रभावशीलता का अध्ययन।

(3) **पृष्ठभूमि** :

समाज और शिक्षा में अन्योन्याश्रित संबंध है। तथ्य यह है कि जैसा समाज होता है, वैसी ही उसकी शिक्षा होती है और जैसी किसी समाज की शिक्षा होती है, वैसा ही वह समाज बन जाता है। प्रत्येक समाज अपनी मान्यताओं एंव आवश्यकताओं के अनुकूल ही अपनी शिक्षा की व्यवस्था करता है और समाज की मान्यताएँ एवं आवश्यकताएँ उसकी भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक और आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है। समाज में होने वाले परिवर्तन भी उसके स्वरूप एवं आवश्यकताओं को बदलते है और उनके अनुसार उसकी शिक्षा का स्वरूप भी बदलता रहता है। आज का युग विज्ञान

का युग है, हर समस्या के समाधान के लिए वैज्ञानिक तकनीकी का प्रयोग हमारे समाज में हो रहा है और इस वैज्ञानिक तकनीकी की सहायता से मानव चाँद पर अपने कदम रख चुका है और अन्य ग्रहों पर पहुँचने के लिए प्रयत्नशील है। आज के मानव ने अपने मस्तिष्क का इतना विकास कर लिया है कि चाँद पर अब अंतरिम स्टेशन बना रहा है फिर भी आज संसार में जहाँ विज्ञान और तकनीकी हर क्षेत्र में व्याप्त है वहाँ यदि व्यक्ति या समाज अंधविश्वास, संकीर्णता, रूढ़िवादिता तथा पूर्वाग्रहों में जकड़ा हुआ है तो समाज की प्रगति में रूकावट पैदा हो जाती है अंधविश्वास से तात्पर्य एक तर्कहीन विश्वास से है, जिसका आधार अलौकिक प्रभावों की काल्पनिक व्याख्या है, बिल्ली को देखकर रास्ता बदल देना अंधविश्वास का एक प्रमुख उदाहरण है। अतः यह कहा जा सकता है कि ''किसी भी कार्य के परिणामों से अपरिचित होते हुए भी इस पर आँखें मूंदकर विश्वास करना या जो तर्क के बिना मान लिया गया विश्वास हो, अंधविश्वास कहलाता है।

भारतीय साहित्य तथा विज्ञानों के विषय में मैकाले ने कहा है कि ''भारतीय धर्म–ग्रन्थ अन्धविश्वासों तथा मूर्खतापूर्ण तथ्यों से भरे पड़े हैं। जैसे गधे से छू जाने पर शरीर को किस तरह पवित्र करना चाहिए अथवा बकरी मारने के पाप का प्रायश्चित किन वेद–मंत्रों द्वारा करना चाहिए, मैकाले ने कहा है कि भारतीय अन्धविश्वास में इस तरह लिप्त है, जैसे कोई मूर्ख आदमी व्यंग्यपूर्ण कार्यों में लिप्त रहता है।''

रवि राठौर के ब्लाग अंधविश्वास, 06 फरवरी, 2014 में, अंधविश्वास के प्रति व्याप्त कुरीतियों को खत्म करने के लिए मीडिया को समाज में जागरूकता फैलाने और साक्षरता का प्रचार प्रसार करने की भूमिका के रूप में देखा जाता है, लेकिन वर्तमान समय में मीडिया अपनी इस भूमिका का कितना निर्वहन कर रहा है ये हम सब जानते हैं, कोई भी टीवी चैनल चला लें डरावना सा रूप धारण किये हुए बाबा दर्शकों को शनि, राहु, केतु, गृह दोष, मंगल दोष और ना जाने कैसे–कैसे दोषों से डराते हुए और लौकेट धन लक्ष्मी वर्षा यन्त्र, लक्ष्मी कुबेर यंत्र, इŭछापूर्ति कछुआ, लाल किताब, गणपति पेंडेंट, नजर रक्षा कवच आदि की दुकान लगा कर बैठे मिल जायेंगे। आज हर आदमी किसी ना किसी समस्या से जूझ रहा है। बस इसी बात का फायदा उठाकर अंधविश्वास की अपनी दुकान चलाने के लिए मीडिया का सहारा लिया जा रहा है क्योंकि मीडिया एक ऐसा माध्यम है जिसके जरिये कोई भी बात सीधे–सीधे लाखों, करोड़ों लोगों तक पहुँचाई जा सकती है लेखक ने इन बातों को जोर देते हुए कहा कि प्यार में असफल व्यक्ति को कोई ज्योतिष या तांत्रिक उसका प्यार कैसे दिला सकता है? तांत्रिक के उपाय अपनाने पर संतान मिल जाती है तो फिर मेडिकल की पढ़ाई की क्या जरूरत है? अगर कोई व्यक्ति यन्त्र खरीदकर रातों रात अमीर बन सकता है तो आफिस में सुबह से शाम तक सर खपाने की क्या जरूरत हैं, कुल मिलाकर दुखी हारे हुए परेशान लोगों को ठगने का एक बड़ा जाल फैलाया जा चुका है जिसकी चपेट में फंसकर लोग अपने को लुटवा रहे है। लेखक ने अपने वक्तव्य में अंधविश्वास व मीडिया के बारे में बखूबी बयां किया है।

डा0 दिनेश मिश्र 6 फरवरी 2012, के द्वारा ''अंधविश्वास एवं मानवाधिकार'' ब्लाग में अंधविश्वास के द्वारा हो रही घटनाओं से हो रहे मौलिक अधिकारों का हनन रोकने का प्रयास किया है। बहुत समय पहले प्राकृतिक घटनाओं जैसे सूर्यग्रहण, चन्ग्रहण, भूकम्प मनुष्य व पशुओं को होने वाली महामारी के सम्बन्ध में कोई वास्तविक जानकारी नहीं थी। इन आपदाओं के पूर्वानुमान लगाने, महामारी से बचाव व नियंत्रण के साधन ज्ञात नहीं थे। तब इन्हें जादू–टोने से ज्ञात या दूर किया जाता था। आज के समय में इन सभी घटनाओं के वैज्ञानिक तर्क मौजूद हैं, सभी प्रकार के बीमारियों के लिए यंत्र तथा दवा उपलब्ध है, फिर भी हमारा समाज उसी अंधविश्वास पर अब भी चल रहा है। लेखक ने इस पक्ष पर ज्यादा जोर देते हुए कहा है कि अंधविश्वास के द्वारा हो रही बुरी घटनायें जिसमें मनुष्य अपने जन, धन की हानि करवा बैठता है। उन अंधविश्वास व कुरीतियों, सामाजिक विषमताओं के कारण हनन होने वाले मानव अधिकारों के सूची में बहुत से मामले हैं पर आवश्यकता है आम लोगों को उनके अधिकारों के सम्बन्ध में बताने की, उनको जागरूक करने, उनके अधिकारों के संरक्षण का माहौल बनाने की ताकि किसी भी व्यक्ति के मौलिक अधिकारों का हनन न हो। सभी मानव अंधविश्वास के प्रति जागरूक हों तथा दूसरों को जागरूक करें तथा समानता का जीवन जियें।

बीबीसी न्यूज में प्रकाशित घटनाओं के अनुसार अंधविश्वास मानव जाति के लिए जानलेवा बनता जा रहा है। **28 फरवरी, 2018** न्यूज के अनुसार 31 जनवरी को तेलंगाना के हैदराबाद में एक शख्स से बच्चे बली दे दी। इसी प्रकार की घटनाए समाज में आए दिन घटती है, जो मानव समाज की संकीर्ण विक्षिप्त मानसिकता को प्रकट करती है।

26 सितम्बर, 2016 में भीलवाड़ा के आसींद तहसील निवम्बाहेड़ा गांव में 3 वर्षीय बालक सुंदर को निरमोनिया हो जाने पर घरवालों ने गर्म लोहे के वार से दगवाया।

गंगवाल तहसील जवासिया गांव में 9 महीने की बच्च लाड खटीक की मौसमी बीमारी को दैवीय प्रकोप मान पेट पर तीन जगह डाम लगवा दिए गए।

विद्यार्थियों को विज्ञान के शिक्षा तथा प्रयोगों, तर्कों के द्वारा उनके मन में बैठे अंधविश्वास को प्रयोगों द्वारा समझा कर दूर किया जा सकता है। आज पूरी दुनिया में विज्ञान की पताका लहरा रही है जीवन तथा विज्ञान एक दूसरे के पर्याय बन गये हैं विज्ञान से मानव को असीमित शक्ति प्राप्ति हुई है फिर भी अगर उनमें अंधविश्वास व्याप्त है तो वो हमारे समाज की कहीं ना कहीं कमी है जिसे शिक्षा के अनुप्रयोगों के द्वारा ही दूर किया जा सकता है।

(4) उद्देश्य :

- सह–शैक्षिक (नुक्कड़) नाटक से संबंधित जागरूकता कार्यक्रमों का सामाजिक अंधविश्वास को दूर करने में प्रभावशीलता का अध्ययन।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण (पीपीटी) प्रदर्शन से संबंधित सह–शैक्षिक जागरूकता कार्यक्रम का सामाजिक अंधविश्वास को दूर करने में प्रभावशीलता का अध्ययन।
- लघु फिल्म प्रदर्शन से संबंधित सह–शैक्षिक जागरूकता कार्यक्रमों का सामाजिक अंधविश्वास को दूर करने में प्रभावशीलता का अध्ययन।

(5) परिकल्पना :

- सामाजिक अंधविश्वास के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता पर नुक्कड़ नाटक का प्रभाव पड़ता है।
- सामाजिक अंधविश्वास के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण (पीपीटी) प्रदर्शन का प्रभाव पड़ता है।

(6) शोध प्रविधियाँ :

(1) जनसंख्या :

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में जयपुर जिले के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को शामिल किया गया।

(2) अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श :

अध्ययन में तीन महाविद्यालयों के 75 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया। न्यादर्श का चयन व यादृच्छिक तथा सौद्देश्य विधि द्वारा किया गया।

(3) शोध में प्रयुक्त उपकरण :

अध्ययन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली व संरचित जागरूकता कार्यक्रमों का प्रयोग किया गया।

(4) अध्ययन में प्रयुक्त विधि :

प्रस्तुत शोध कार्य की समस्या को भली–भांति समझकर व सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन कर अध्ययन हेतु ''प्रयोगात्मक अनुसंधान विधि'' (पूर्व व पश्च परीक्षण) का चयन किया गया।

(7) **प्रदत्त संचयन तथा विश्लेषण** :

शोध परीक्षण के प्रशासन तथा अंकन के पश्चात् प्रदत्तों का संकलन एवं व्यवस्थापन किया जाता है। संकलित प्रदत्त प्राप्त प्रदत्त के रूप के जाने जाते हैं। शोधकर्त्री द्वारा शोधकार्य में संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली प्रयुक्त की है।

परिकल्पना – ।

बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का सामाजिक अंधविश्वास को दूर करने के प्रति जागरूकता के विभिन्न आयामों के प्रति पूर्व व पश्च परीक्षण द्वारा प्रदत्तों का विश्लेषण :

सामाजिक अंधविश्वास के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता पर नुक्कड़ नाटक का प्रभाव।

तालिका :

परीक्षण	आयाम –1	आयाम– 2	आयाम– 3	आयाम– 4	आयाम– 5	कुल जागरूकता
पूर्व परीक्षण	40%	41.66%	55.85%	59.56%	45.25%	48.36%
पश्च परीक्षण	83.21%	85.76%	81.15%	87.35%	78.54%	83.20%

ग्राफ :

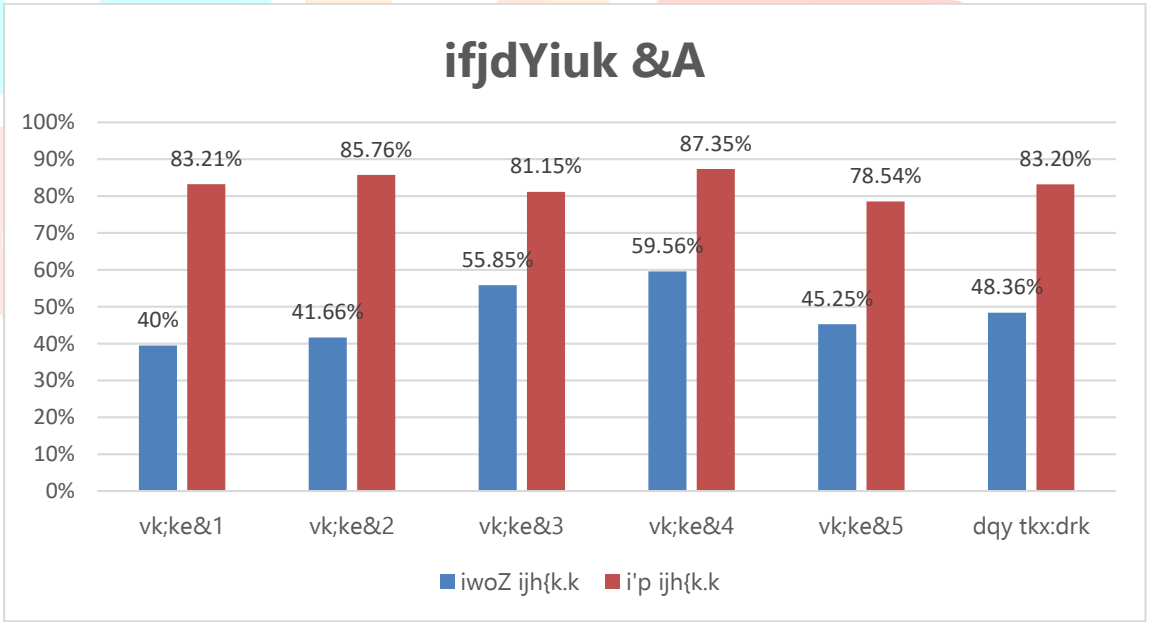

परिणामों का विश्लेषण व व्याख्या :

उपरोक्त तालिका व ग्राफ के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता सह–शैक्षणिक जागरूकता कार्यक्रम नुक्कड़ नाटक के प्रभाव के कारण पूर्व–परीक्षण में (कुल 48.36 प्रतिशत) की तुलना में पश्च परीक्षण में (कुल 83.20 प्रतिशत) अधिक प्राप्त हुई।

परिकल्पना– ।।

सामाजिक अंधविश्वास के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण (पीपीटी) प्रदर्शन का प्रभाव पड़ता है।

तालिका :

परीक्षण	आयाम–1	आयाम–2	आयाम–3	आयाम–4	आयाम–5	कुल जागरूकता
पूर्व परीक्षण	26.43%	25.84%	36.96%	36.18%	32.75%	31.63%
पश्च परीक्षण	79.75%	72.36%	73.10%	72.78%	61.25%	71.85%

ग्राफ :

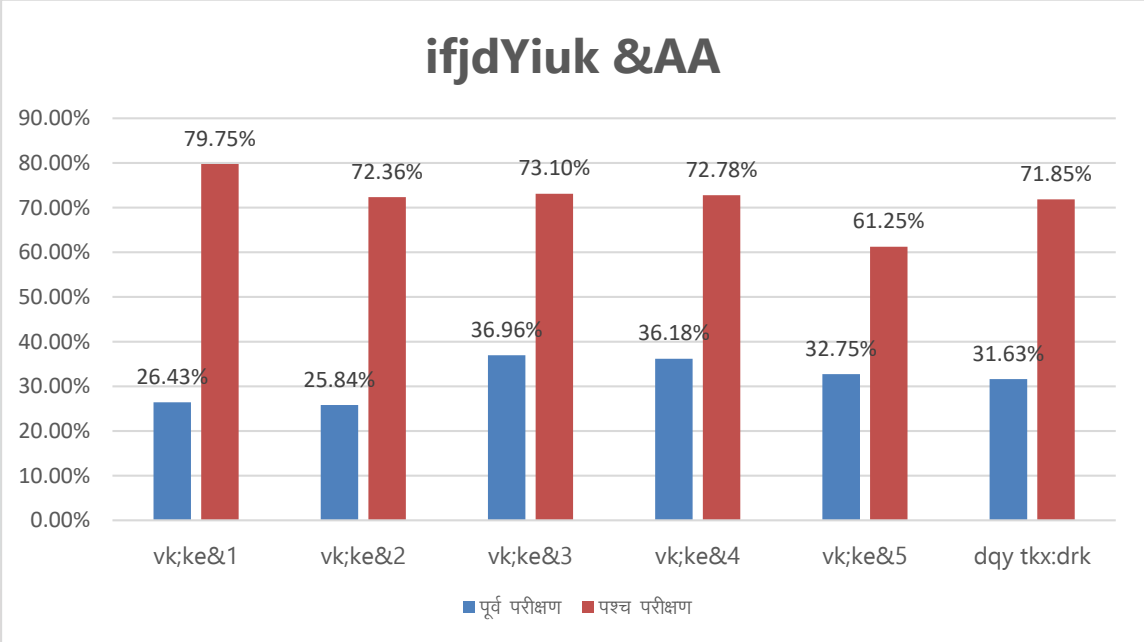

परिणामों का विश्लेषण व व्याख्या :
उपरोक्त तालिका व ग्राफ के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता सह–शैक्षणिक जागरूकता कार्यक्रम पीपीटी प्रदर्शन के सकारात्मक प्रभाव के कारण पूर्व–परीक्षण में (कुल 31.63 प्रतिशत) की तुलना में पश्च परीक्षण में (कुल 71.85 प्रतिशत) अधिक प्राप्त हुई।

(8) **निष्कर्ष :**
उपरोक्त परिणामों की व्याख्या व विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति सफलतापूर्वक हुई।

परिकल्पना–प्रथमः सामाजिक अंधविश्वास को दूर करने के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता पर नुक्कड़ नाटक का सकारात्मक व अधिक प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना–द्वितीय : सामाजिक अंधविश्वास को दूर करने के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता पर पीपीटी प्रदर्शन का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
अतः परिकल्पना प्रथम व द्वितीय को स्वीकार किया जाता है।

(9) **शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ :**
प्रस्तुत शोध–कार्य सामाजिक अंधविश्वास को दूर करने के प्रति बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को जागरूक करने हेतु सह–शैक्षणिक जागरूकता कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का अध्ययन करने का एक लघु प्रयास है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :–

(1) प्रस्तुत लघु शोध से बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को सामाजिक अंधविश्वास को दूर करने के प्रति जागरूकता का ज्ञान हो सकता है।
(2) प्रशिक्षणार्थियों में सकारात्मक दृष्टिकोण में वृद्धि होगी। प्रशिक्षणार्थी अंधविश्वास से हो रहे शोषण तथा इसके बुरे प्रभावों से अवगत होंगे।
(3) प्रशिक्षणार्थी सामाजिक अंधविश्वास को दूर करने के उपायों, इससे सम्बन्धित अधिनियमों तथा कानूनों की जानकारी प्रदान कर समाज को जागरूक कर सकेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- शर्मा आर.ए. (2005) शैक्षिक अनुसंधान, मेरठ कमल पुस्तक डिपो।
- श्रीवास्तव डी.एन. (2006) अनुसंधान विधियां, आगरा साहित्य प्रकाशन।
- सारस्वत, मालती, (2008) भारतीय शिक्षा का विकास एवं समाजिक समस्याएँ, आलोक एंव गौतम प्रकाशन, लखनऊ
- पाण्डेय, राम सकल(2005) ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक'' भार्गव प्रकाशन आगरा,
- www.google.com
- Epaper.patrika.com
- Journals.sagepub.com
- https://sstmaster.com
- https://www.kailasheducation.com
- https://www.amarujala.com
- https://www.patrika.com/jaipur-news